धरती की पुकार

सुनीता अग्रवाल
गाजियाबाद

धरती की पुकार

धरती माँ की है यही पुकार।
हरा–भरा हो यह संसार।।
वन और जंगल हों हरे–भरे।
किसी की बुरी नजर न उन पर पड़े।।

नीम और पीपल की छांव हर घर में हो।
आम–अमरूद के मीठे–मीठे फल हों।
जामुन के पेड़ों की वह छइयां हों।
शहतूत का खट्टा–मीठा स्वाद हो।।

पाएं इनसे ऑक्सीजन हम।
पाएं अनेक कीमती औषधियां हम।।
छाया व शुद्ध हवा पाएं इनसे हम।।
इनके क्या गुण गिनवाएं हम।।

वन और जंगल न कटने दो।
हरियाली को न कम होने दो।।
मानवता के संरक्षक हैं ये।
इनका न विनाश होने दो।

समय रहते ही सजग हो जाओ।
वृक्ष हैं जीवन हमारा यह समझ जाओ।।
यह हैं हमारे जीवन का आधार।
बिन इनके हम हैं बेकार।।

ग्रामीण जीवन है हरियाली से आच्छादित।
तभी वहां का जीवन है खुशियों से प्रभावित।।
दीर्घायु पाते हैं वहां के कर्मयोगी।
हम भी क्यों नहीं बन पाते उनसे कर्मयोगी।।

पर्यावरण की सुरक्षा

पर्यावरण को मित्र बना लो।
वातावरण को स्वच्छ बना लो।।
धरती को हरी–भरी बना लो।
वृक्षों को खूब–खूब लगा लो।।

धरती को तुम स्वर्ग बना लो।
प्रदूषण को तुम दूर भगा लो।।
जन–जन को जागृत कर लो।
पर्यावरण की सुरक्षा कर लो।।

खतरे में है धरती हमारी।
मिलकर हमें बचाना है।।
अधिक से अधिक पेड़ लगाकर।
हमें पर्यावरण को बचाना है।।

कूड़ा–करकट डाल–डालकर।
सब जल–संसाधन कर दिए बेकार।।
अमृत–सा जल गरल दिया कर।।
संकल्प करके फिर इसको अमृत बनाना है।।

देश की प्रगति के नाम पर।
क्यों हो रहा प्रकृति–संपदा का दोहन।।
इस तरह होता रहा अगर दोहन
तो विकास भी हो जाएगा बेकार।

पेड़ कटने से हुए जंगल वीरान हैं।
पशु–पक्षी सब हुए बेघर हैं।।
पर्यावरण के ये कवच हैं।
हमें इन सब को बचाना है।।

स्वच्छ पर्यावरण अपना हो।
स्वच्छ जल और वायु हो।।
दूषित करे न कोई इसको।
ऐसा दृढ़ संकल्प मन में हो।

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात हिंदी।

–रवीन्द्रनाथ ठाकुर